आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received: 10/09/2022; Accepted: 13/09/2022; Reviewed: 20/09/2022; Published: 24/09/2022

हिंदी साहित्य और राष्ट्रीयता

- डॉ. रंजना पाटिल
हिंदी विभागाध्यक्ष
श्री चन्नबसवेश्वर महाविद्यालय,
भालकी जि बीदर (५८५३२८)

डॉ. रंजना पाटिल, हिंदी साहित्य और राष्ट्रीयता ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022, (168-175)

प्रस्तावना -: हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो द्ज्ञात होगा कि उसका भी विकास क्रमशाअनेक : ,सामग्री संकलन का कार्य किया :शिवसिंह सेंगर प्रभृति ने मुख्यत ,प्रारंभ में गार्सादतांसी | विद्वानों द्वारा हुआ है तो जार्ज ग्रियर्सन एवं मिश्र बन्धुओं ने वर्गीकरण की ओर ध्यान दिया तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया आचार्य शुक्ल के बाद आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसके विभिन्न | सांस्कृतिक स्रोतों के आख्यान की दृष्टी से तथा डॉ रामकुमार वर्मा ने उसके विभिन्न पक्षों के साहित्यिक मूल◌्यांकन की दृष्टी से महत्वपूर्ण कार्य किया |

इस प्रकार हिंदीप्रस्तुत | साहित्य का इतिहास तांसी से लेकर अब तक निरंतर विकासोन्मुख रहा है- यह प्रयास किन प्रेरणाओ एवं प्रयोजनों से प्रेरित है | प्रयास भी विकास की इस दीर्घ श्रंखला में एक नूतन कड़ी है |

शब्द संकेत-: विषय विवरण| निष्कर्ष ,हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय विचारधारा ,

विषय विवरण-: हिंदी साहित्य के इतिहास का जो ढांचाकाल विभाजन एवं वर्गीकरण प्रचलित ,रेखा-रूप , किन्तु उनके इतिहास लेखन के बा | वह बहुत कुछ आचार्य शुक्ल के द्वारा ही प्रस्तुत एवं प्रतिष्ठित है,हैद विगत तिस पैंतीस वर्षों में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में पर्याप्त अनुसन्धान कार्य हुआ है जिससे बहुत सी ऐसी नई सामग्री नये तथ्य और नये निष्कर्ष प्रकाश में आए है – आचार्य शुक्ल के वर्गीकरण |विश्लेषण अदि के सर्वथा प्रतिकूल पड़ते है |

राष्ट्रीय विचारधारा को ही राष्ट्रवाद के नाम से संद्ज्ञायित किया जा सकता है वर्तमान गांधीवाद को | अति प्राचीन कल से ही राष्ट्रीय ,आधुनिक युग में ही नहीं | व्यापक दृष्टी से देखा जय तो राष्ट्रवाद पर्याय कहा है

'राष्ट्र' जब से | विचारधारा का अस्तित्व रहा हैका जन्म हुआ तभी से इस विचारधारा का अभ्युदय हुआ होगा किन्तु इस नाम से किसी वाद का जन्म हुआ हो ऐसी परम्परित प्रवृत्ति के दर्शन नहीं होते है भारतीय रूषी | किसी सीमा विशेष से बंध कर चिन्तन के सूत्रों को जन्म नहीं देता सम्पूर्ण मानवता के लिए ही नहीं अपितु जिव मात्र के हित की कामना को व्यक्त करता है तभी तो सर्वे सन्तु :तथा सर्वे भवन्तु सुखिन 'विश्व वसुधैव कुटुम्बकम' | जैसी मांगलिक सूक्तियां जन्म ले पायी है :निरामय

भारतीय संस्कृति समन्वय वादी तथा व्यापक दृष्टिकोण रखती है इसी कारण राष्ट्रीय विचारधारा को | पर्याप्त स्थान न मिल सका वर्तमान युग में राष्ट्रीय भावना चिंतनधारा के रूप में विकसित हुईतथा साहित्य | | में भी व्यापक स्थान मिल सका प्राचीन कल में भी राष्ट्र की गरिमा को स्वीकार किया गया है'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसीकह कर राष्ट्रीय विचारधारा को ही बल ' दिया गया है प्रत्येक देश के लिए अनिवार्य | – है की वहाँ स्वदेश की भावना का ही जन्म होजिससे देश में सांस्कृतिक व् नैतिक भावनाओं की गरिमा बढ़ सके एवं स्वतन्त्रता की विचारधारा को बल मिल सके |

विषय विवरण -: राष्ट्र की गरिमा तथा उसके मूल्यों के अस्तित्व की सुरक्षाहित संपूर्ण श्रध्दा समर्पण का नाम - ,पोटकर हमने अस्तित्व प्राप्त किया है-जिस धरा में लोट ,जिस देश में हम जन्म लिया है | ही राष्ट्रीय भावना है के भाव का सम्पृक्त होना पूर्ण राष्ट्रीयता का द्योतक है 'स्व' इस | का संबंध जुड़ जाना नैसर्गिक है 'स्व' उसके साथ कुछ समीक्षक राष्ट्रीय भाव का पृथक से अस्तित्व नहीं स्वीकारते अपितु वीर रस के अंतर्गत ही इसका समावेश | वर्तमान में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति आस्था भी राष्ट्रीयता है जो वीर के स्थायी भाव से संबंध | करना चाहते है वीर रस में राष्ट्रीयता का सम :अत | नहीं रखती है ावेश करना राष्ट्रीय विचारधारा का अर्थ संकोच करना होगा |

मानव का भाव उसे एक निश्चित सीमा में बांध देता है तथा यह आत्मीय भाव समर्पण की भावना 'स्व' यह विचारधारा राष्ट्र के लिए जीवन को भी तुच्छ | को जन्म देकर राष्ट्रीय विचार धारा से संपृक्त कर देता है बना द ेती हैवह बाह्य शक्ति के ,राष्ट्रीय चेतना स्वतंत्रता की उपासक होती है | जीवन से अधिक राष्ट्र होता है , यदि पराधीनता की स्थिति आ जाती है तो उसे समूल ,अधिकार को किसी भी स्थिति में शान नहीं कर सकती | उखाड़ने के लिए बलिदान के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है

राष्ट्रीय भावना से ही किसी भी देश ,जाती अथवा वर्ग की सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रह सकती है , राष्ट्रीय | अन्यथा आक्रामक शक्तियाँ उस देश के मूल्यों का अवसान करने में आततायी की तरह आक्रमण करती है विचारधारा स्वदेश प्रेम की भावना को पल्लवित करती है तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर ही बल देती है , राष्ट्रीय विचारधारा से ,देश की संपत्ति देश में ही रहती है | जिससे उस देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है | ओत प्रोत कोई भी देश पिछड़ा हुआ नहीं रह सकता वहाँ का समाज होता है

राष्ट्रीय विचारधारा मानव समाज की अमूल्य निधि हैव्यापक दृष्टीकोण से मूल्यांकन किया जाता है , क्योंकि सीमाहीन संसार में ,यह आक्षेप भी लगाया जा सकता है की इससे संकीर्ण भावना को बल मिलता है ; राष्ट्रीय विचारधारा एक देश में रहनेवाली विभिन्न जातियों | बसी समस्त मानवता में खाइयाँ पैदा हो जाती है

विभिन्न वर्ग तथा विभीन्न भाषा भाषियों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करने वाली प्रथम साधिका है राष्ट्रीय | जिससे चेतना का ,विचारधारा नागरिक को कर्तव्य के प्रति जागरूक रखने के लिए प्रेरणा का कार्य करती है संचरण होता रहता है और वह राष्ट्र किसी भी आक्रामक शक्ति के स ामने पराजित नही हो सकता राष्ट्रीय | | विचारधारा के मूल में आत्म गौरव की भावना रहती तथा उत्साह जिससे का भाव रहता है

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय विचारधारा -: हिंदी साहित्य के आदि काल में राष्ट्रीय विचारधारा वीर रस की कविता में किसी अंश तक प्राप्त होती है |किन्तु यह विचारधारा जाती विशेष की गौरव गाथा को अभिव्यक्त करती है | चारण कवियों ने | राजपूती गौरव एवं मर्यादाओं के अस्तित्व को व्यक्त करने की दृष्टि से रचनाएँ रची गई है कवियों ने हिन्दू ग | राजपूती वीरों को गौरव गाथा तथा बलिदान के अनेक चित्र प्रस्तुत किए है ौरव एवं संस्कृति के संरक्षण की दृष्टी से राष्ट्रीय स्वर को जन्म दिया है प्रताप के सन्दर्भ में ओजस्वी वक्तव्य व्यक्त हुआ है | –

पटकूं मुछां पाण कै पटकूं निजतन करद

दीजे लिख दिवाणइणदी महली बात इक ,

महाराणा प्रताप के चरित्र को लेकर अनेक कवियों ने मुक्त रूप से स्वर प्रदान किये है – दुरसाजी ने लिखा |

अस लेगों अणदाग पघ लेगों अण नामी |

गो आडा गवड़ाय| जिकों बहती धुर वामी ,

नवरोजे नह गयो न गो आतसां नवल्ली |

न गों झरोखां हेठ| जेय दुर्नियाँणा दहल्ली ,

गहलोत राणा जीती गयी| ससण मूंद रस नाडसी ,

निसास मुक भरिय नयण ,तो मृत साह प्रतापी सी |

महाकवि भूषण ने प्रताप के संदर्भ में यशोगाथा के रूप में अनेक कवित्त व् छप्पय आदि लिखें है जो | वीर रस की | आधुनिक युग में राष्ट्रीय विचारधारा का स्वस्थ रूप सामने आया है | राष्ट्रीय विचार के पोषक है कविता के रूप में जो राष्ट्रीय भाव व्यक्त हो रहे थे वे जागरण एवं क्रांति का स्वरूप लेकर प्रेरणा के मन्त्र बने | जब ब्रिटानी सरकार ने इस देश पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया और भारतीयों के अधिकार छिनकर आतंक पूर्ण राज्य करने लगे तो पाश्चात्य विचार धारा में प्रभावित हो जागरण के स्वर उभरने लगे तथा क्रांति का बिगुल बजने लगाइंकिलाब जिंदाबाद `| नई स्फूर्ति का उदय हुआ ,नया उत्साह ,हम आदमी में एक नया जोश , का स्वर "गूंज उठा और गली गली तथा चौराहे चौराहे पर स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा महात्मागाँधी तथा अन्य स्वतंत्रता प्रेमियों ,फुट पड़ा के आव्हान पर समूचे भारत में राष्ट्रवाद का आन्दोलन बिखर गया तथा युवा वर्ग एक नया उत्साह लेकर प्राणों की बलि करने के लिए कृतसंकल्प हो चला इस |

मैथिलि शरण गुप्त सुभद्रा कुमारी चौहान ,भावना से अनुप्रनिगत हो माखनलाल चतुर्वेदी सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों ने सोतंी हुई भावनाओ को उज्वलित कर दिया तथा क्रांति का स्वर स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए प्रबल शस्त्र बन गया जिससे देश दीर्घकालीन परतन्त्रता से मुक्त होकर स्वतंत्रता का नव विहान जीने लगा एवं आदमी स्वदेश प्रेम की मधुर गंध में आनंदित हो उठा गोपालराय ने आधुनिक .डॉ| युग में द्विवेदी युग को राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत मानते हुए लिखा है व्यापक द्रष्टि से देखने पर द्न्यात होता है की छायावाद युग भारत के लिए अस्मिता की खोज का युग है सदियों की दासता के कारण भारतीय जनता आत्मकेंद्रित होती है | पाश्च | रुधिग्रस्त हो गयी थीात्य साम्राज्यवादियों के आगमन ने देश में एक विराट तूफान पैदा कियाजिसके , इसका परिणाम था भारतीय | कारण रुढीयों में सूक्त देश की आत्मा पूरी शक्ति और उद्वेलन के साथ जाग उठी | पुनर्जागरण का व्यापक आन्दोलन जिसके जन्मदाता थे राजाराम मोहनरॉय

प्रबुद्ध व समाज सुधारकों के विचारों से प्रभावित राष्ट्रीय आन्दोलन का जन्म हुआ तथा आर्थिक राजनीतिक दासता के विरोध में स्वतंत्रता केवल राष्ट्रीय भावना से ही अनुप्रगानित नहीं अपितु मानव मात्र की स्वाधीनता का स्वर उदयाभुत हुआ |

माखनलाल चतुर्वेदी का संपूर्ण साहित्य राष्ट्रीय विचारधारा से अनुप्रगानित है ' कैदी और कोकिला ' – कविता में स्वानुभूति व्यक्त हुई है

क्या | देख ना सकती जंजीरों का गहना ?

हताकधियाँ क्यों यह ब्रिटिश राज्य का गहना |

कोल्हू का चरक चु | जीवन की तान ?

मिट्टी पर लिखे अँगुलियों ने क्या गान ?

हूँ मोट खीचता लगा पेट पर जुआ |

खाली करता हूँ ब्रिटश अकड का कुआ |

माखनलाल चतुर्वेदी भारतीय आत्मा के नाम से विख्यात हुए ये एक जागरुक उत्साही तथा | संवेदनशील कवी थे जीन्होंने आजीवन राष्ट्रीयता के गान गाकर अपने आप को राष्ट्र का अमर सैनिक प्रमानिगत किया | माता आदि इनके प्रसिद्ध रचनाए है ,समर्पण ,युगचरण ,इनके सृजन में हिमकिरिटनी हिमातरंगिनी | – श्री चतुर्वेदी की जवानी कविता उत्साह भर देती है

द्वार बलि का खोल चल भूलोड कर दे,

एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दे,

मसल कर अपने इरादो सी उठकर,

दो हथेली है की पृथ्वी गोल कर दे,

रक्त है ,या नसों में क्षुद्र पानी ?

जांच कर तु सीस दे कर जवानी |

कवी आक्रोश में ब्रिटेन सरकार द्वारा थोपे गए शासन के प्रति खुला विद्रोह उभर कर आया है |

राष्ट्रवादी कवियों में श्री बालकृष्ण शर्मा का स्वर भी प्रखर रूप में उभर कर आया कवी ने देश के | चढाने दो बलि जीवन की गीत गाने | नवयुवकों से स्वतंत्रता की बलिवेदी पर शहीद होने के लिए अवाहन किया – वाला कवी क्रांति से कहता है

एक बार बस और नाच तु श्यामाँ !

सामान सभी तैयार,

कितने ही असुर,

चाहिए कितने तुमको हार,

कर मेखला मुंड मालाओ से

बन बन अभिरामा –

एक बार बस और नाच तु श्यामा !

भैरवी मेरी तेरी भक्ता

तभी बजेगी मृत्यु लड़ाएगी जब तुमसे पंजा |

ले जी खडग और तु खपर

उसमे रुधिर भरूँगा माँ
मै अपनी मंजिल भर| भर-

नवीन भारत की आर्थिक स्थिति से विशागना हैवे उस युवक को भी जगाना चाहते है जो पराजित जीवन जीने , – के लिए विवश और एक निराश जिंदगी के लिए अँधेरे में भटक रहा है

ओ भिकमंगेअरे पराजित जो मजलूम चिरादोहित ,

तु अखंड भण्डार शक्ति का| जाग अरे निद्रा सम्मोहित ,

पावों की तदपा ने वाली हुंकारों से जल थल भर दे

अंगारों के अम्बारो में अपना ज्वलित पलीता धर दे |

डॉ गोपाल रॉय ने लिखा है ,अर्जुन ,भीम ,कृष्ण ,राष्ट्रीय कवियों ने भी राम "हरिश्चंद्र आदि प्राचीन युगपुरुषों के चरित्रों के उदहारण दे कर जनता में विश्वास और आस्था पैदा कर ने का यत्न किया |" श्री मैथिलीशरण गुप्ता निराला आदि ने इन्ही महापुरुषों के माध्यम से ,सूर्यकांत त्रिपाठी ,सियारामशरण गुप्ता , – श्री सियाराम शरण गुप्त ने कहा | भारतीय जनजीवन में स्फूर्ति फूंकने के लिए राष्ट्रीय स्वर को जन्म दिया

प्राप्ति इसे दूर के अतल से

सत्य हरिश्चन्द्र की अटलता,

लब्ध इसे ताराग्रह मंडल से

श्री प्रल्हाद की अनंत भक्ति समुज्वलता |

रूद्र कुरुक्षेत्र के समर में

साधा है अकाम ज्ञान कर्मयोग इसने

पुन्यरत पाञ्चजन्य स्वर में

जीवन का पाया है अमर योग इसने

श्री निराला ने इन देव प्रतिकों के माध्यम से राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति की है –

क्या यह वही देश है

भीमार्जुन आदि का कीर्ति क्षेत्र

चिरकुमार भीष्म पताका ब्रह्मचर्य दीप्त

उडती है आज भी जहां के वायुमंडल में

उज्वल उधिर और चिरनवीन ?

श्री मुख से कृष्णा के सुना था जहाँ भारत में

गीता गीत सिंहनाद मर्मवाणी जीवन संग्राम की

सार्थक समन्वय ज्ञान कर्मभक्ति योग की

कवी निराला ने भारतीय युवा मानस को उदबोदित करते हुए कहा –

जागो फिर एक बार

श्री सोहनलाल द्विवेदी ने भी राष्ट्रीय विचारधारा से अनुप्रेरित हो जागरण के अनेक गीत गाये है-

जागो हिन्दू मुग़ल मराठो,

जागो मेरे भारतवासी

जननी की जंजीर बजती,

जाग रहे कड़ियों के छाले |

सुना रहा हु तुम्हे भैरवी

जागो मेरे सोने वालो !

श्री द्विवेदी की राष्ट्रीय विचारधारा महात्मा गाँधी की विचारधारा से समय रखती हैमूलतः श्री द्विवेदी , गांधीवादी कवी ही रहे है और गांधीवाद का मूल आधार ही राष्ट्रीय विचारधारा है सुभद्राकुमारी चौहान की | इन संकलनों में अनेक कवितायें राष्ट्रीय विचारों से | राष्ट्रीय कविताऐ विचारधारा और मुकुल से संकलित है | समन्वित हैश्री राम नरेश त्रिपाठी ने स्वराज्य को लेकर अनेक कविताओं का सृजन किया अपने युग के | सहज आकांक्षा को व्यक्त करते हुए कवि ने दैनिक जीवन की अनिवार्यता की पूर्ति को आवश्यक कहा है तथा - सांप्रदायिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इस प्रकार की है

करेंगे क्या लेकर अपवर्ग हमारा भारत ही सुख स्वर्ग |

नहीं है किसी लक्ष्य पर ध्यान| चाहिए केवल स्वप्ना सामान ,

इसे तजकर क्या तरु निर्मूल| करेंग लेकर किंशुक फूल ,

प्राकृत पुरुषों का जीवन मूल| चाहिए केवल घर का रुल ,

राष्ट्रीय विचारधारा के अन्य कवियों में उदय शंकर भट्ट जगन्नाथप्रसाद मिलिंद रामधारीसिंह दिनकर , केदारनाथ म ,मैथिलीशरण गुप्तिश्र| महेशचंद्र प्रसाद आदि का कार्य उल्लेखनीय है ,

श्री त्रिपाठी ने मानसीउदयशंकर भट्ट की ताक्षशिला मिलिंद की | स्वप्न आदि अनेक कृतियाँ प्रदान की , कुरुक्षेत्र आदि रचनाये राष्ट्रीय विचारधाराओं से प्रोत है श्री गुप्त ,रश्मिरथी ,दिनकर की रेणुका ,जीवन संगीत की भरतडॉ रॉय ने | राष्ट्रीय कृति है और इसीके कारण राष्ट्रकवी की उपाधि से सम्मानित किये गए ,भारती-सांस्कृतिक काव्य को स्वरुप से दो-काव्य मूल्यों की दृष्टी से राष्ट्रीय" राष्ट्रीय विचारधारा के सन्दर्भ में लिखा है पहले वर्ग में तो | वर्गों में रखा जा सकता हैवे रचनायेसाथ ही ,प्रति है जो अपने युग के लिए तो सार्थक है ही " राजनीतिक-इन रचनाओं में केवल तात्कालिक सामाजिक | निरपेक्ष उत्कर्ष की स्थिति दिखाई देती है-उनसे युग

,साधना ,जीवन को शक्ति प्रदान करने वाले साम्य-अपितु इनमें मानव ,उद्देश हिम अभिव्यक्ति नहीं हुए न्याय , | है ल्यों की प्रतिष्ठा भी की गयीआदि सामान्य मू ,स्वाधीनता"

भारतेंदु से लेकर भारत | पाक युद्ध तक राष्ट्रीय विचारधारा की कविताओं का सृजन होता रहा है- | चीन युद्ध तथा भारत पाक युद्ध के दिनों में राष्ट्रीय कविताओं की भीड़ खडी हो गयी थी-भारत

निष्कर्ष

हिंदी कवियों ने १९०० लेकर १९४६ तक राष्ट्रीय विचारधारा को प्रमुख स्थान दियास्वतंत्रता के पश्चात इस , किन्तु जब कभी युद्ध की रागिनी छिड़ी तभी राष्ट्रीय स्वर प्रखर हो जाता है | धारा का मंद होना स्वाभाविक था राष्ट्रीय विचारधारा और स्वदेश प्रेम की भावना प्रत् |येक रचनाकार के लिए अनिवार्य है वस्तुतः कवी के स्वर | | में इस धारा का होना ही उसे पूर्णता प्रदान करता है

संदर्भ ग्रन्थ सूची -:

१ हिंदी साहित्य का इतिहास(, डॉनगेन्द्र प्रकाशन ., केंद्र लखनऊ)

२हिंदी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (, उमेश शास्त्री, देवनागर प्रकाशन जयपुर)

३ हिंदी साहित्य का इतिहास (, राजनाथ शर्मा, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा १९८७ पंचम संस्करण)

****